भजन

तर्ज–धीरे धीरे प्यार को बढ़ाना है

बन के दुल्हन तेरी जाना है,बेहद पार जाना है
तुमसे ही इश्क मैने पाना है,बेहद पार जाना है
1–वही तो है घर अपना,प्यारा निज वतन अपना
जहां की है धरती गगन चेतन
नूर भरा कण कण में,एक दिली हर मन मे
खोल दिए तूने यहां निज नैनन
पीछे तेरे कदम बढ़ाना है
2–तुम ना आते तो क्या करती, ऐसे ही आहें भरती
तेरे प्यार के लिए तड़पते उम्र भर
इलम ले के आए यहां,इश्क भी उपजाए यहां
बिन तेरे न जिएगें अब तो एक पल
सब कुछ तुझपे ही लुटाना है
3–नूरी वहां तन होगें, नूरी नैनन होगें
छाया रहे सदा जहां नूर का आलम
हर तरफ है इश्क वहां, इश्क मयी धरती जहां
इश्क मे हो चूर हम तुम मेरे खसम
नूर में ही इश्क को मिलाना है